सांकृत्यायन की स्मृति में गोष्ठी का आयोजन

दिनांक 12 मई 2012 को दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से वन विभाग के मन्थन सभागार में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की स्मृति में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में वक्ताओं ने सांकृत्यायन के व्यक्तित्व और उनके कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए जहां उन्हें घुम्मकड़ शास्त्र का पंडित बताया वहीं उन्हें महान दार्शनिक व दूरदर्शी व्यक्ति की संज्ञा भी दी।

सांकृत्यायन की स्मृति में आयोजित गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रोफेसर पुष्पेश पंत ने राहुल सांकृत्यायन के बारे में कहा कि उनका जीवन व्यक्तित्व बहुत विशाल था। उनके बारे में जितना कहा जाय वह कम ही होगा। बिना किसी डिग्री व उपाधि के ही वे कई विषयों के विद्वान थे। समाज और संस्कृति को जानने व समझने के लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन घुम्मकड़ी में ही बिता दिया था। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के बारे में बताते हुए प्रो0 धीरेन्द्र शर्मा ने कहा कि उनका असाधारण व्यक्तित्व उन लोगों के लिये हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेगा जो अपना अधिकांश समय हमेशा नये कार्यों को करने में लगाते रहते हैं। उत्तराखण्ड, विशेषकर मंसूरी में बिताये दिनों के संस्मरणों को राहुल सांकृत्यायन की पुत्री श्रीमती जया पड़हाक ने बड़े रोचक ढंग से उपस्थित श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया। वरिष्ठ साहित्यकार श्री लीलाधर जगूड़ी ने उनके साहित्य को अद्वितीय बताते हुए कहा कि स्कूलों से लेकर महाविद्यालयों तक के पाठ्यक्रमों में उनके साहित्य को शामिल किया जाना चाहिए। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने उनके जीवन और रचना संसार पर प्रकाश डालते हुए उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही। प्रो0 जोशी ने दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से निकट भविष्य में राहुल सांकृत्यायन के परिजनों को देहरादून में बुलाकर उनसे परस्पर संवाद का एक कार्यक्रम करने की बात भी कही। दून पुस्तकालय के सलाहकार श्री राजन बृजनाथ ने सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं व अथिति जनों को धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। इस प्रदर्शनी में उनके दुर्लभ फोटो, पारिवारिक चित्रों सहित तमाम महत्वपूर्ण पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया था। दून पुस्तकालय द्वारा लगायी इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी चित्र व पुस्तकें सांकृत्यायन की पुत्री श्रीमती जया पड़हाक के सौजन्य से प्राप्त हुई। इस कार्यक्रम में देहरादून नगर के प्रमुख साहित्यकार, साहित्य प्रेमी, स्कूली छात्र, पुस्तकालय के सदस्य व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

Programme in memory of Mahapandit Rahul Sankrityayan

A programme in memory of Mahapandit Rahul Sankrityayan was organised on May 12, 2012. Speakers on this occasion included Prof. Dhirendra Sharma, Shri Liladhar Jagudi, Mrs Jaya Parhawk (daughter of Rahul Sankrityayan) and Prof. Pushpesh Pant of the Jawaharlal Nehru University. Jaya Parhawk shared her memories of her father during their stay in Mussoorie. Other speakers highlighted the various facets of Snkritryayan's life and work, especially his travels in India, Tibet, Afghanistan and Central Asia which earned him the sobriquet as the originator

From the Director

A HAPPY NEW YEAR to all our members, well-wishers and library users. As we complete the sixth year of our service to the book-loving people of Dehradun, and enter a new year we have mixed feelings. On the one hand we feel really proud and happy about what we have managed to achieve in this short period of six years, and on the other we feel quite despondent when we realise that our efforts to build on our present achievements and create an institution of our dreams are hitting against the wall.

Let me first refer to our achievements, not with a view to blowing our own horn but more in the nature of sharing information with our readers. Starting from scratch in December 2006, we have managed to build a collection of more than 17,500 volumes in diverse subjects in Hindi and English. The quality of books in the library has widely been appreciated by our members and visitors to the library. Our membership now exceeds 1425. This includes 85 life members. Membership, moreover, is constantly on the rise. Members have been actively using the library. On an average 750-800 books are borrowed every month. The library maintains two reading rooms – one for newspapers and magazines open to the general public from 8 AM to 8 PM on all days, and one for library books and journals open to members during library working hours. Both are full of readers throughout the time they are open. At times we have had to squeeze in extra chairs to accommodate the rush of users. It is a very satisfying sight for us to see a large number of young people using our reading rooms, and based on the feedback that we get, benefiting from its use. For instance, last year we came to know that about 40 young users of the library had qualified for jobs through various

competitive examinations. Another interesting, yet quite unanticipated, development is that many young people have started using the library premises to either do their own reading or to have discussion with their peers on common subjects in small groups. It is a very pleasant sight to see four or five small groups sitting in our small front lawn on a sunny winter day engrossed in study or discussion among themselves.

Now the reason for our despondence. We are now facing a really severe space crunch. Our present space is just not enough to meet even our present requirements, not to speak of future growth. There is no space available to accommodate additional shelves for books, more seating for the growing number of readers in our reading rooms, or work place for our own staff. Any visitor to the library will attest that books are spread all over the place. The dilemma is that the library cannot stop acquiring more books, else it will become a dead institution, but the space to accommodate new acquisitions is simply not there. Furthermore, we have had to put on hold all plans to provide more facilities and services. For instance we have long felt the need to add a children's section which we cannot do with the existing facilities. In the absence of a hall we have had to hire space to hold panel discussion and other programmes. All our efforts to expand space at the existing premises have not borne fruit; but we have not lost hope. We continue to hope that sooner or later we will succeed and we will be able to fulfil our dream of giving a first rate, state of the art library to the people of Dehradun. In this endeavour we seek the assistance of all our readers and well-wishers. Let us jointly work towards this goal with sincerity and dedication, and hope 2013 will prove lucky for us.

of "science of travel". Speakers recalled his encyclopaedic knowledge, contribution to learning especially Tibetan studies and Buddhism, and his signal contribution in bringing a large body of manuscripts from Tibet which are now housed in the Patna museum. A number of prominent litterateurs and citizens of the city attended the programme.

On this occasion a modest exhibition on the life and works of Mahapandit Rahul Sankrityayan was also put up at the Manthan Conference Centre, the venue of the programme. The photographs and books were provided kind courtesy of Mrs Jaya Parhawk.

राहुल एक परिचय

महापंडित राहुल सांकृत्यायन असाधारण व बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। ज्ञान की खोज में वे निरंतर यात्राएं करते रहे। सही मायने में उनका जीवन एक संन्यासी की तरह था। उनका जन्म 9 अपैल 1893 को उत्तरप्रदेश के जनपद आजमगढ़ के गांव पन्दाह में हुआ था। उनके बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा रानी की सराय मदरसे में तथा निजाबाबाद मिडिल स्कूल में हुई। बाद में काशी में रहकर उन्होंने संस्कृत व्याकरण, साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया। यद्यपि उन्होंने कोई डिग्री हासिल नहीं कि पर उन्होंने तमाम भाषाओं सीखीं व विज्ञान, पुरातत्व विज्ञान, इतिहास, भारतीय दर्शन और साहित्य का गहन अध्ययन किया। उन्हें बचपन से ही नई-नई बातों को सीखने व ज्ञान की खोज में निरंतर घूमने व अध्ययन करने की ललक थी। आध्यात्मिकता की

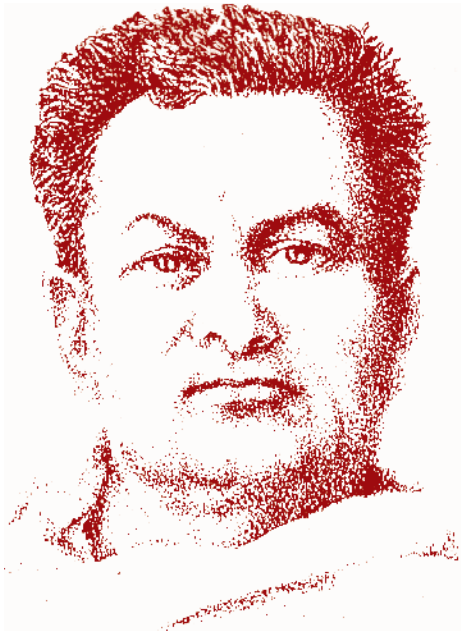

खोज में जब वे वैष्णव साधु बन गये तो उनका नाम रामोदर दास हो गया। आर्य समाज से आकृष्ट होकर वे आगरा में आर्य मुसाफिर विद्यालय में प्रचारक बनकर तैयारी करने लगे। बाद में वे बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुए और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात वे राहुल सांकृत्यायन के नाम से पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गये। उनके मन में सामाजिक विषमताओं के प्रति आक्रोश और विद्रोह की जो भावना थी उस कारण वे मार्क्सवादी बन गये।

1919 में उनके कदम राजनीति की ओर बढ़े। उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और उन्हें बक्सर जेल में नजरबंद रखा गया। जेल से छूटने के बाद वे छपरा जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री बने। उसके बाद वे नेपाल की यात्रा पर गये। नेपाल की यात्रा से लौटने पर उन्हें पुनः कैद करने के बाद हजारीबाग जेल में रखा गया। जेल से छूटने के बाद उन्होंने अपना ध्यान किसानों की समस्या, हिंदू-मुस्लिम एकता व छूआ-छूत को दूर करने में केन्द्रित किया। 1927 में राहुल सांकृत्यायन बौद्ध धर्म का गहन अध्ययन करने के लिये श्रीलंका गये। वहां उन्हें त्रिपिटकाचार्य की उपाधि से विभूषित किया गया। वहीं पर उन्होंने बौद्ध भिक्खु की दीक्षा ली और अपना नया नाम धारण किया।

1929 में वे तिब्बत गये। वहां पर उन्होंने **16,000 भोट शब्दों** का संकलन (उनके नेपाली व संस्कृत के अर्थो सहित) किया। वे तिब्बत से 1619 तिब्बती पोथियां भी लाये। 1930 में वे भारत लौट आये। इसके बाद 1931 से 1938 तक वह निरंतर भ्रमण पर रहे।इस दौरान उन्होंने तिब्बत सहित एशिया व यूरोप के कई देशों की यात्राएं की।

1937 में राहुल जी दूसरी बार रुस यात्रा पर गये और लेलिनग्राड में रहे। वे वहां प्राच्य विद्या संस्थान में संस्कृत पढ़ाते थे। वहीं उनकी भेंट भारत-तिब्बत अध्ययन की सचिव एलेना नरवेरतोवना से हुई, जिनसे बाद में वे विवाह सूत्र में बंध गये। इस विवाह के बाद सितम्बर 1938 में उनका एक पुत्र इगोर हुआ।

1939 में वे पूरी तरह किसान आन्दोलन में जुट गये और उन्होंने स्वामी सहजानंद सरस्वती के सहयोग से किसान सभा गठित की। इसी दौरान वे गिरफ्तार हुए और ढाई साल तक जेल में रहे। जेल में रहते हुए उन्होंने तुलनात्मक दर्शन पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक **'दर्शन दिग्दर्शन'** लिखी। 1944 में रुस जाते समय वे ईरान में भी रुके। रुस में वह जून 1945 में पंहुचे और लेनिनग्राड में प्रोफेसर के रुप में काम किया। वहां वह कई बुद्धिजीवियों और दार्शनिकों से मिले। जुलाई 1947 में वे रुस से भारत लौट आये। 1947 में वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मुम्बई अधिवेशन के सभापति चुने गये। इसके बाद राहुल जी ने अपना सारा समय लेखन कार्यों पर केन्द्रित किया और उन्होंने ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयों पर कई ग्रंथ लिखे। हिमालय उनके लिये सदैव

प्रेरणा का स्रोत रहा। हिमालय प्रेम उन्हें पुनः कालिंमपोंङ खींच ले आया वहीं उनकी भेंट कमला जी से हुई जो बाद में उनकी पत्नी बनीं। 1953 में उनकी एक पुत्री व 1955 में एक पुत्र हुआ।

1956 में वे अपने परिवार सहित नेपाल गये वहाँ तिब्बत यात्रा के दौरान की अपनी पुरानी यादें तरोताजा की। दो वर्ष बाद जब वे चीन की यात्रा पर गये तो उन्हें वहां दिल का दौरा पड़ा। 1959 में श्रीलंका के विद्यालंकार विश्वविद्यालय में उन्होंने दर्शनशास्त्र के डीन का पद संभाला। लगातार यात्रा और कठोर मेहनत के कारण उनके स्वास्थ्य पर दुश्प्रभाव पड़ने लगा। 1961 में श्रीलंका में बीमार पड़ने पर उन्हें वापिस दार्जिलिंग लौटना पड़ा। इसी वर्ष दिसम्बर में कोलकाता में दुबारा दिल का दौरा पड़ने पर वे अपनी स्मरण शक्ति खो बैठे। कोलकाता और मास्को के अस्पतालों में उनका कई महीनों तक इलाज चलता रहा परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। मार्च 1963 में उन्हें वापिस दार्जिलिंग लाया गया। अन्ततः दार्जिलिंग में 14 अप्रैल 1963 को राहुल जी का देहावसान हो गया।

राहुल जी को उनकी विद्वता व लेखन के लिये समय समय पर महापंडित, त्रिपिटकाचार्य, साहित्य वाचस्पति, डी0लिट्, पद्मभूषण तथा साहित्य अकादमी जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित किया गया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक बहु-भाषाविद् थे। वे हिन्दी, संस्कृत, पाली, भोजपुरी, उर्दू, अरबी, परसियन, सिंघली, फ्रेंच तथा तमाम भाषा व बोलियों के प्रखर जानकार थे।

एक रचनाशील लेखक के तौर पर उन्होंने विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 150 से अधिक पुस्तकें और ग्रंथ लिखे। उन्होंने हिन्दी भाषा में **मध्य एशिया का इतिहास** भी लिखा। इस पुस्तक को साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला। प्राच्य संस्कृति पर कथ्यात्मक शैली में लिखा **वोल्गा से गंगा** उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। उन्होंने भारत के पड़ोसी देशों के इतिहास व भूगोल के बारे में भी बहुत कुछ लिखा। यायावरी के आधार पर उन्होंने घुमक्कड़ शास्त्र पुस्तक लिखी। हिमालय से सम्बन्धित उनकी पुस्तकें **दौर्जिलिंग परिचय, कुमांऊ, गढ़वाल, हिमाचल प्रदेश, जौनसार-देहरादून तथा तिब्बत में सवा वर्ष** काफी चर्चित रही हैं। राहुल जी ने नेपाल के बारे में भी बहुत सा साहित्य लिखा परन्तु उसके प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगने से यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पायी। उल्लेखनीय है कि राहुल जी को उत्तराखण्ड से अत्यधिक लगाव था। उन्होंने 1950 में मंसूरी की पहाड़ी में एक भवन खरीदा। जिसका नाम **हर्न क्लिफ** था। उन्होंने 1950 से लेकर 1958 तक इस भवन में रहते हुए विविध विषयों पर 56 पुस्तकों का लेखन किया।

डॉ0 रंगनाथन की याद

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र ने किया आयोजन

भारत में पुस्तकालयों की स्थापना, विकास और उनकी अवधारणा को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले डॉ0 एस0आर0 रंगनाथन का जन्मदिन वन विभाग के मन्थन सभागार में 12 अगस्त, 2012 को राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस के रुप में मनाया गया। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र द्वारा सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएयन (सीजीएलए) के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकालय संगठन से जुड़े व्यक्तियों और विभिन्न संस्थानों से आये लोगों ने रंगनाथन जी के व्यक्तित्व और कार्यो पर प्रकाश डालने के साथ-साथ ही वर्तमान में पुस्तकालयों की स्थिति पर भी चर्चा की। हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 एम0एस0 राणा इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने डॉ0 रंगनाथन के आदर्शो को याद करते हुए उन्हें भारत में पुस्तकालय विज्ञान का जन्मदाता बताया। उन्होंने पुस्तकालय की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी भी देश में स्थित समृद्ध पुस्तकालयों से सही मायनों में वहां के बौद्धिक स्तर का परिचय पाया जा सकता है। उन्होनें डॉ0 रंगनाथन द्वारा पुस्तकालयों के लिये प्रतिपादित पांच महत्वपूर्ण नियमों को अति महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि ये नियम आज भारत ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रांसंगिक हैं।

डॉ0 रंगनाथन द्वारा दिये गये योगदान को प्रो0 बी0के0 जोशी, निदेशक दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र ने उपयोगी बताया। उत्तराखण्ड में पुस्तकालयों की स्थिति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दून पुस्तकालय के जरिये उनका हमेशा प्रयास रहेगा कि पाठकों को उनकी रुचि की किताबें प्राप्त हो सकें। डी0ए0वी0 (पी0जी0) कालेज के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष श्री एम0एस0 नेगी ने उत्तराखण्ड में वर्तमान जिला पुस्तकालयों की खराब स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनके समुचित विकास की बात पर जोर दिया। उन्होंने इस दिशा में पुस्तकालय आयोग की सिफारिशों को लागू करने जरुरत बतायी। सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएयन (सीजीएलए) के अध्यक्ष श्री के0पी0 सिंह ने पुस्तकालय विज्ञान पर डॉ0 रंगनाथन जी द्वारा दिये गये योगदान पर चर्चा की और उनके आदर्शो पर आगे बढ़ने की बात कही। इस कार्यक्रम में दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के श्री खुशीराम शर्मा व श्री जगदीश सिंह महर ने भी पुस्तकालय विज्ञान व डॉ0 रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित नियमों के सन्दर्भ में अपने विचार उपस्थित जनों

के बीच रखे।इस अवसर पर सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएयन (सीजीएलए) की ओर से इस साल का लाइफ एचीवमेंट पुरस्कार ओ0एन0जी0सी0 की पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती एम0 देव को दिया गया। इस कार्यक्रम में सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएयन (सीजीएलए) के सुश्री चरनजीत कौर, श्री वी0पी0 सिंह, श्री ए0के0 सुमन तथा दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री के0सी0 सक्सेना, डॉ0 मनोज पंजानी, श्रीमती सुमन भारद्वाज,श्रीमती योगिता थपलियाल, श्रीमती गीताजंलि भटट, श्रीमती मीनाक्षी कुकरेती भारद्वाज व श्रीमती मधु डंगवाल सहित पुस्तकालय के सदस्यगण तथा पुस्तकालय संगठनों से जुड़े तमाम व्यक्ति उपस्थित थे।

Librarian's Day

A programme to celebrate Librarian's Day, in honour of Shri S.R. Ranganathan, the father of Library Science in India, was organised on August 12, 2012, in collaboration with the Central Government Libraries Association (CGLA), Dehradun at Manthan Conference Centre. This was the third consecutive year in which such a programme was organized. The main speaker on the occasion was Dr R.S. Rana, Librarian, HNB Garhwal Central University, Srinagar. The CGLA honoured Mrs M Dev, retired librarian of ONGC Dehradun, with its Lifetime Achievement Award, on the occasion. A number of librarians of the city and prominent citizens attended the function.

उत्तराखण्ड के पुरावशेषों का प्रलेखन

पिछले साल अगस्त में लगभग सभी राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में पिथौरागढ़ जनपद के पाताल भुवनेश्वर स्थित चामुण्डा देवी मंदिर में स्थापित देवी की अष्टधातु की प्रतिमा चोरी होने की खबर प्रमुखता से छपी थी। उत्तराखण्ड के जनमानस में यह मिथक एक सत्य के रुप में प्रचलित है कि यहां की धातु निर्मित प्रतिमाएं अष्टधातु की बनी हैं इस कारण सोने के प्रलोभन में इनको चुरा लिया जाता है। वस्तुस्थिति यह है कि अधिकांश प्रतिमाएं कांस्य एवं कुछ पीतल में निर्मित हैं, जबकि बहुत कम चांदी एवं सोने में। पाताल भुवनेश्वर से चुरायी गयी प्रतिमा कांस्य में निर्मित बतायी गयी है।यह प्रतिमा लगभग 17 वीं ई0 सदी में निर्मित है। इस प्रतिमा का विवरण 1970 में प्रो0 महेश्वर प्रसाद जोशी एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व महानिदेशक स्व0 श्री मुनीश चन्द्र जोशी द्वारा अपने-अपने शोध कार्यों में दिया है।

उत्तराखण्ड में स्थान-स्थान पर मंदिर एवं मूर्तियां प्राप्त होती हैं जो बहुधा असुरक्षित स्थिति में हैं। कमोवेश यही स्थिति भारत के अन्य प्रदेशों में भी है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए इनकी सुरक्षा हेतु संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने एक महत्वाकांक्षी योजना स्मारकों एवं पुरावशेषों का राष्ट्रीय मिशन, 2010 के दशक से प्रारम्भ की और भारत के हर प्रदेश के लिये एक समन्वयक नियुक्त किया, जिसके माध्यम से सम्बन्धित प्रदेश के विभिन्न स्थानों में प्रलेखन केन्द्र स्थापित किये गये। उत्तराखण्ड में प्रो0 महेश्वर प्रसाद जोशी को राज्य समन्वयक नियुक्त किया गया और प्रदेश में प्रलेखन केन्द्र स्थापित करने के प्रयास किये गये। मिशन के राष्ट्रीय उद्देश्य एवं महत्व को देखते हुए दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी के संरक्षण में प्रलेखन केन्द्र स्थापित किया गया। श्री चन्द्रशेखर तिवारी के कार्य नेतृत्व में इसका संचालन किया गया। यह उत्तराखण्ड राज्य का एकमात्र प्रलेखन केन्द्र है। इस केन्द्र में प्रलेखन कार्य पर होने वाले सम्पूर्ण व्यय का भार स्मारकों एवं पुरावशेषों का राष्ट्रीय मिशन द्वारा वहन किया गया है।

> स्मारकों एवं पुरावशेषों का राष्ट्रीय मिशन के निदेशक डॉ0 आर0एस0 फोनिया ने मूर्ति चोरों, तस्करों, उनके संरक्षकों, तथा ऐसे किसी भी व्यक्ति/संस्था को चेतावनी देते हुए कहा है कि "मिशन ने बहुलांश में यत्र-तत्र बिखरी हुई मूर्तियों और पुरावशेषों का प्रलेखन कर लिया है, जिसमें पाताल भुवनेश्वर की कांस्य प्रतिमा भी सम्मिलित है, और जिस किसी व्यक्ति/संस्था के पास यह पायी जायेगी वह दंडित किया जायेगा। अतः जिस किसी के संग्रह में इस प्रकार के अवशेष हों उन्हें तत्काल मूल स्थान पर रख दें।"
>
> (उत्तराखण्ड राज्य के एक मात्र प्रलेखन केन्द्र होने के नाते इस महत्वपूर्ण प्रलेखन के लिये बधाई व आभार प्रकट करते हुए प्रो0 महेश्वर प्रसाद जोशी ने डॉ0 आर0एस0 फोनिया का उक्त वक्तव्य जो कि उन्हें दूरभाष पर प्राप्त हुआ दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र को दिया।)

उल्लेखनीय है कि पाताल भुवनेश्वर से चुरायी गयी प्रतिमा का प्रलेखन भी दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा किया जा चुका है। इसके अलावा उत्तराखण्ड में विभिन्न स्थानों पर जहां-जहां असुरक्षित स्थिति में मूर्तियां हैं और जिनके विषय में प्रकाशित/अप्रकाशित माध्यमों से सूचना उपलब्ध हुई है उनको भी दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा प्रलेखित किया जा चुका है जो कि एक राष्ट्रीय अभिलेख के रूप में भारत सरकार के पास सुरक्षित हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत से प्राप्त पुरावशेषों का प्रलेखन सम्बन्धी अभिलेख संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के वेब साइट में उपलब्ध होगा।

इस प्रलेखन से सम्पूर्ण भारत में जहां कहीं से भी प्रलेखित मूर्ति चुरायी गयी होगी और जिस किसी भी व्यक्ति और संस्था के पास पायी जायेगी चाहे वह भारत में, हो या विदेशों में राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय कानूनों के तहत पुरावशेषों को उसके मूल स्थान पर वापिस लाया जा सकेगा, और जिस किसी भी व्यक्ति या संस्था के पास मूर्ति पायी जायेगी उसको सश्रम कारावास की सजा भी दी जा सकेगी। इसके लिये सम्बन्धित प्रलेखन एक वैधानिक अभिलेख माना जायेगा।

निसन्देह दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा प्रलेखित उत्तराखण्ड की 1226 पुरावशेषों को मूर्ति चोर न तो कहीं प्रदर्शित कर पायेंगे और नही किसी व्यक्ति

और संस्था को बेच पायेंगे। इन पुरावशेषों के अतिरिक्त दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र अपने स्तर से और अधिक पुरावशेषों के प्रलेखीकरण के लिये प्रयासरत है। इस तरह अब उत्तराखण्ड के असुरक्षित स्थानों से कदाचित मूर्ति चोरी सम्भव हो सकती है परन्तु उनका विक्रय या सार्वजनिक प्रदर्शन लगभग असम्भव होगा।

इसके अतिरिक्त केन्द्र सरकार के भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के अधीन संरक्षित स्थलों के सम्पूर्ण पुरावशेषों का एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संग्रहालय में संरक्षित पुरावशेषों का प्रलेखन कार्य उनके निजी कर्मचारियों द्वारा किया जा रहा है जिसका सम्पूर्ण व्यय भार भी स्मारकों एवं पुरावशेषों का राष्ट्रीय मिशन द्वारा किया जा रहा है।

पाठकों के पत्र

आपका समाचार पत्रक **हिमाद्रि** प्राप्त हुआ, धन्यवाद। आपका पत्रक उपयोगी व सूचनात्मक है। पत्रक में पुस्तकालय व अनुसंधान केंद्र में विविध उपयोगी विषयों पर आयोजित संगोष्ठियों व कार्यशालाओं के सचित्र समाचार निश्चित रूप से पाठकों को पुस्तकों के अध्ययन व पुस्तकालय का सानिध्य प्राप्त करने के लिए उत्प्रेरित करेंगे। सूचना क्रांति की पराकाष्ठा के इस युग में भी पुस्तकों व पुस्तकालयों के महत्व की अनदेखी नहीं की जा सकती। आपकी उत्प्रेरक गतिविधियां निश्चित ही पठन संस्कृति

को दृढ़तर करेंगी। इस सुंदर पत्रक के प्रकाशन हेतु आपका समस्त कार्यालय साधुवाद का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित
डॉ0 दिनेश चंद्र चमोला
प्रभारी, राजभाषा अनुभाग
भारतीय पेट्रोलियम संस्थान
मोहकमपुर देहरादून

पंडित राहुल सांकृत्यायन के जीवन यापन व लेखन के बारे में जानने की मेरी जिज्ञासा लगभग 15 साल पुरानी है। बचपन में कक्षा 7 में मैंने उनकी एक कहानी यू0पी0 बोर्ड की हिन्दी विषय की एक किताब में पढ़ी थी। मैं उनके लेखन व मसूरी के जुड़ाव के कारण बहुत प्रभावित था। आज 15 साल बाद उनके बारे में जानने का सौभाग्य उनकी सुपुत्री श्रीमती जया पड़हाक, प्रो0 पुष्पेश पंत, डा0 धीरेन्द्र शर्मा व श्री लीलाधर जगूड़ी जी के माध्यम से जानना एक सुखद अनुभति सा था। राहुल जी का घुमक्कड़ शास्त्र अद्वितीय है। उनका लेखन चिंतन, मनन व मसूरी प्रवास एक रिसर्चर को पूरा थीसिस लिखने को मजबूर कर सकता है। राहुल जी के जीवन पहलू से मेरा परिचित होना एक सम्मान पाने जैसा था। मंथन सभागार मे दून पुस्तकालय एवं रिसर्च सेन्टर के माध्यम से बुद्धिजीवियों को एक मंच पर

एकत्रित करने में निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी जी का प्रयास सराहनीय है। एक महत्वपूर्ण बात जो मुझे इस कार्यक्रम से पता चली वह थी राहुल जी ने अपने किसी भी कार्य के लिए राष्ट्र से कोई भी पारितोषिक नहीं लिया, बल्कि वह चाहते तो Intellectual Property Rights की तरह उस राष्ट्र संपदा पर अपना स्वामित्व जता सकते थे, परंतु उन्होंने वह राष्ट्र को दिया। सारे बुद्धिजीवियों द्वारा राहुल जी पर दिया गया जीवन वर्णन बेजोड़ था। प्रो0 पुष्पेश जी की राहुल जी के जीवन व लेखन पर डाली गई रोशनी की गतिशीलता पूरे कार्यक्रम की गतिशीलता को राहुल पाश में बांधे रखती है। मैं दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र को धन्यवाद देता हूं कि मैं राहुल जी के व्यक्तित्व से परिचित हो पाया।

विनय गुप्ता
596, डाकरा बाजार,
गढ़ी कैन्ट, देहरादून

समाचार सार

फिल्म *द इण्ड ऑफ समर* का प्रदर्शन

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के तत्वाधान में जापान फाउण्डेशन की ओर से बलवीर रोड स्थित अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सभागार में दिनांक 21 जुलाई, 2012 को *द इण्ड ऑफ समर* नामक फिल्म दिखायी गयी। प्रदर्शन के दौरान कई लोग मौजूद थे।

Japanese film show

A special show of a Japanese film "The end of Summer" was organised in collaboration with the Japan Foundation on July 21, 2012 at the conference hall of the Azim Premji Foundation. On this occasion two representatives of the Japan Foundation, who had specially come for the function were also present. They briefed the audience about the work of the Foundation and also introduced the film. A large number of people enjoyed the film.

परिचर्चा

द आइडिया ऑफ इण्डिया

द आइडिया ऑफ इण्डिया पर एक परिचर्चा का आयोजन दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से 25 फरवरी, 2012 को होटल रीजेण्ट में किया गया। इस परिचर्चा में डॉ0 शेखर राहा, डॉ0 सुमन्तो बनर्जी, डॉ0 बी0के0 जोशी तथा डॉ0 इन्दु सिंह ने भाग लिया। परिचर्चा का संचालन दून पुस्तकालय के सलाहकार श्री राजन बृजनाथ ने किया। इस अवसर पर देहरादून के कई स्कूली छात्र, पुस्तकालय के सदस्य सहित अन्य व्यक्ति उपस्थित थे।

A panel discussion on The Idea of India

A panel discussion on The Idea of India was organised on February 25, 2012 at Hotel Regent. The panellists included Dr Shekhar Raha, Dr Sumanta Banerjee, Dr Indu Singh and Dr B.K. Joshi. The programme was anchored by Shri Rajen BrijNath Adviser in DLRC. The discussion was followed by a lively discussion, the highlight of which was participation by a group of students from Welham Girls School.

पूर्व मुख्यमंत्री श्री एन.डी. तिवारी ने किया संस्थान का अवलोकन

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री एन.डी. तिवारी ने 30 जून 2012 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में पंहुच कर वहां का अवलोकन किया। उन्होंने पुस्तकालय में कार्यरत लोगों से संस्थान से सम्बन्धित आवश्यकताओं और मौजूद समस्याओं पर बातचीत की। आज से 6 साल पहले श्री तिवारी द्वारा ही अपने

मुख्यमंत्रित्व काल में दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की स्थापना की गयी थी।

Shri N.D. Tewari, former Chief Minister Uttarakhand visits the library

Shri N.D. Tewari, former Chief Minister Uttarakhand visited the Library on June 30, 2012 and interacted with the staff regarding the problems and needs of the Library. The Doon Library & Research Centre had been inaugurated by Shri Tewari in December 2006, when he was the Chief Minister of the State.

पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों का भ्रमण

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों का एक दल 26 जुलाई, 2012 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में पंहुचा। यहां आकर दल में शामिल लोगों ने दून पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष और कार्यरत अन्य कर्मियों से पुस्तकालय संचालन के विविध पहलुओं पर चर्चा की और सम्बन्धित बिन्दुओं पर जानकारी प्राप्त की।

Visit by Library Science students from B.R. Ambedkar University, Lucknow

A group of Library Science students from the B.R. Ambedkar Central University, Lucknow visited the Library on July 26, 2012. They familiarised themselves with the functioning of the library and had discussions with the Librarian and other members of the Library Staff.

आर्किटैक्टचर एण्ड प्लानिंग के छात्रों का भ्रमण

दिनांक 9 अगस्त, 2012 को सी0इ0पी0टी0 यूनिवर्सिटी अहमदाबाद के आर्किटैक्टचर एण्ड प्लानिंग के छात्रों के एक दल ने दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में पंहुचकर पुस्तकालय का अवलोकन किया। इस अवसर पर दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी के साथ भ्रमण दल के सदस्यों ने देहरादून के नगरीय विशेषताओं, समस्याओं और उसकी आवश्यकताओं पर विचार-विमर्श किया।

Visit by Planning students from CEPT University, Ahmedabad

A group of Planning students from the CEPT University, Ahmedabad visited the Library on August 09, 2012 and interacted with the Honorary Director on the urban character, problems and needs of Dehradun city.

मिर्जा गालिब की *दस्तम्बो* पर परिचर्चा

दिनांक 10 अक्टूबर 2012 को उर्दू के महान शायर मिर्जा गालिब की गद्य रचना *दस्तम्बो* पर एक विशेष परिचर्चा एवं उसका पाठ दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में किया गया। इस रचना का नागरी में लिप्यान्तरण दून पुस्तकालय की सदस्य एवं उर्दू लेखिका सुश्री नसीम बानो ने किया है। परिचर्चा के दौरान सुश्री नसीम बानो ने इसके कुछ अंश पढ़कर भी सुनाये। इस पुस्तक में मिर्जा गालिब ने अपने जीवन के उन आखिरी दुर्दिनों का भी वर्णन किया है, जब पैसों के अभाव में उन्हें अपने घर के बरतन बेचकर गुजारा करना पड़ा। परिचर्चा का संचालन दून पुस्तकालय के रिसर्च एसोसिएट डॉ0 मनोज पंजानी ने किया। इस अवसर पर जनकवि डॉ0 अतुलशर्मा भी मौजूद थे।

Dastambo

Naseem Bano Ansari, a member of the Doon Library and a Urdu

writer, writer poems and stories for children, read portions of her still unfinished translation of Dastambo, a prose work of Mirza Ghalib, on October 10. The portions she read out dealt with Ghalib's views on the Revolt of 1857 and the description of the days when he had to make ends meet by selling clothes and utensils.

बाल दिवस

बच्चों को भेंट में दीं पुस्तकें

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से परेड ग्राउण्ड स्थित कन्या पूर्व माध्यमिक और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ हर साल बाल दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष दीपावली के अवकाश के कारण पूर्व की तरह बच्चों के साथ विद्यालय परिसर में खेलकूद और व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन नहीं किया जा सका। बच्चों में साहित्यिक पठन-पाठन की रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय व प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापिकाओं को दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र द्वारा बाल साहित्य की 106 पुस्तकें प्रदान की गयीं।

नये प्रकाशन

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से वर्तमान में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। पहली पुस्तिका है *द 'मिसिंग' गर्ल चाइल्ड इन उत्तराखण्ड*। संस्थान के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने इस पुस्तिका के माध्यम से उत्तराखण्ड में कम होती लड़कियों के पीछे छिपे तमाम महत्वपूर्ण कारकों को उजागर किया है। वर्ष 2011 की जनगणना तथा भारत के रजिस्ट्रार जनरल के वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण 20110-11 से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर प्रो0 जोशी ने यह विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

दूसरी पुस्तक *हिमालय के गांवो में* दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के रिसर्च एसोसिएट श्री चन्द्रशेखर तिवारी तथा उत्तराखण्ड विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी डॉ0 अरुण कुकसाल द्वारा लिखी गयी है। इस पुस्तक में उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में आज से 26 वर्ष पूर्व की गयी यात्राओं के रोचक संस्मरण शामिल हैं। इस यात्रा वृतांत के अधिकांश अंश पूर्व में नैनीताल समाचार में 15 अप्रैल 1987 से लेकर 15 सितम्बर 1987 तक के अंकों में धारावाहिक रुप से प्रकाशित हो चुके हैं। यह यात्रा वृतांत 1986-1987 के दौरान उत्तरप्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र में किये गये एक वृहत सर्वेक्षण पर आधारित है। इस सर्वेक्षण/अध्ययन कार्य का निर्देशन तब गिरि विकास अध्ययन संस्थान लखनऊ में कार्यरत प्रो0 बी0के0 जोशी द्वारा किया गया था। इस सर्वेक्षण अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्र के ग्रामीण अंचल की और वहां रह रहे लोगों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति समझना तथा विकास समबन्धी समस्याओं का अध्ययन करना था। पहाड़ी जनजीवन के हालातों को सजीव ढंग से रेखांकित करती इस पुस्तक को एक महत्वपूर्ण दस्तावेज कहा जा सकता है।

तीसरी पुस्तक *उत्तराखण्ड की लोक भाषाएं : स्वरुप और चुनौतियां* है। जिसका लेखन वरिष्ठ भाषाविद् एवं लेखक डॉ0 अचलानन्द जखमोला ने किया है। इस पुस्तक में डॉ0 जखमोला द्वारा उत्तराखण्ड की लोकभाषाओं कुमाऊंनी, गढ़वाली और जौनसारी के स्वरुप पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। वर्तमान में यह पुस्तक प्रकाशन के अन्तिम चरण में है।

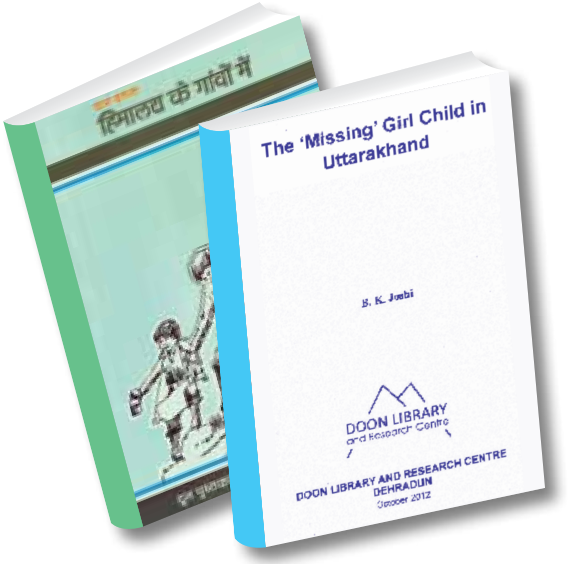

New Publications

A monograph on The *"Missing" Girl Child in Uttarakhand* by B.K. Joshi has recently been brought out. The publication uses data from Census 2011 and the Annual Health Survey, 2010-11 undertaken by the Registrar General of India to analyse the prevalence of pre-natal sex determination in the State and also estimates the number of "missing" girl children in 2010-11.

A book titled *Himalaya ke Gaon Mein*, by Chandra Shekhar Tewari, Research Associate in the Doon Library & Research Centre and Dr Arun Kuksal, Senior Scientific Officer, Uttarakhand Council of Science & Technology, has just been completed and is ready for release. The publication arose out of their participation in an extensive survey of villages undertaken in 1986-87 in the then 8 hill districts of undivided Uttar Pradesh under the supervision of Dr B.K. Joshi at

the Giri Institute of Development Studies, Lucknow. These two Research Assistants maintained a diary of their observations in the villages they visited during the course of the survey. Parts of the diary were serialised in the Nainital Samachar earlier. Permission of Nainital Samachar has been obtained to include the portions serialised by them.

A publication on the linguistic study of Garhwali, Kumaoni and Jaunsari (in Hindi) by Dr Achalanand Jakhmola is also in the press. It will be published as soon.

प्रसिद्ध फिल्मकार यश चोपड़ा को दी श्रद्धांजलि

सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता और निर्देशक यश चोपड़ा के निधन पर दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र ने उन्हें 26 अक्टूबर 2012 को भावभीनी श्रद्धांजलि दी और फिल्म जगत में उनके महत्वपूर्ण योगदान को याद किया। इस अवसर पर देहारदून के सुपरिचित चित्रकार और पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री आलोक बिहारी लाल ने उनकी 1969 में प्रदर्शित *इत्तफाक* व 1984 में प्रदर्शित *मशाल* फिल्म के बारे में चर्चा की। दून पुस्तकालय के रिसर्च एसोसिएट डॉ0 मनोज पंजानी ने उनकी प्रसिद्ध फिल्म एवं राष्ट्रपति के रजतपदक से सम्मानित फिल्म *धर्मपुत्र* के बारे में विस्तार से श्रोताओं को जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ0 अतुलशर्मा सुश्री प्रत्यूष वत्सला त्रिपाठी, सुश्री नसीम बानो ने भी यश चोपड़ा के योगदान को याद किया।

A Tribute to Film Maker Yash Chopra

On October 26 the Doon Library and Research Centre paid a tribute to the eminent film maker Yash Chopra. Shri Aloke Behari Lal former Director General of Police, a Painter and a of cinema and music aficionado spoke at length about two films directed by him Yash Chopra: *Ittefaque*, released in 1969 and *Mashal* released in 1984. Manoj Panjani spoke about *Dharamputra* released in 1962. This film was based on Acharya Chatursen Shastri's novel of the same name and was the recipient of the President's Silver Medal.

भारतीय भाषाओं और कुमाऊं अंचल के जागर पर डॉ0 जॉन लेविड का व्याख्यान

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से इन्द्रलोक होटल के सभागार में दिनांक 17 दिसम्बर, 2012 को हिन्दी भाषा और कुमाऊं अंचल में प्रचलित जागर पर कनेडियन अध्येता डॉ0 जॉन लेविड का व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें डॉ0 लेविड द्वारा भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति और विकास पर कई जानकारियां दी। उन्होंने कुमाऊं अंचल में प्रचलित जागर गायन के सन्दर्भ में किये गये अपने शोध कार्यो का भी प्रस्तुतीकरण किया। व्याख्यान से पहले निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने डॉ0 लेविड और उनके कार्यो का परिचय दिया। व्याख्यान में पूर्व मुख्य सचिव उत्तराखण्ड श्री सुरजीत किशोर दास, श्री इन्दु कुमार पाण्डे, दून पुस्तकालय के सलाहकार श्री राजन बृजनाथ, डॉ0 अचलानन्द जखमोला,श्री भगवती प्रसाद नौटियाल सहित लोक संस्कृति से जुडे कई व्यक्ति उपस्थित थे।

Interaction with Prof. John Leavitt and Prof. Annie Montaut

On December 17 a fascinating discussion was organized with Dr John Leavitt, Professor of Ethno-Linguistics in the Department of Anthropology, University of Montreal (Canada) and Prof. Annie Montaut, Professor INALCO (National Institute for Oriental Languages and Civilisations), Paris (France). Prof. Leavitt talked about small languages (in terms of number of speakers) and also dwelt on the evolution of on the origin and evolution languages with numerous examples from Indian languages. He also dwelt on his studies of Jagar and folk songs like nyauli and hurkiya bol that have an intimate link with agricultural practices and the changes that have taken

place in them over time. Prof, Annie Montaut talked about the problems of translation from one language to another and illustrated her talk with numerous examples of the translations of leading literary works undertaken by her. The presentations were followed by a lively discussion and question and answer session.

लोकार्पण

मेरा हिन्दुस्तान

प्रसिद्ध प्रकृति प्रेमी और शिकारी जिम कार्बेट की पुस्तक *माई इण्डिया* का हिन्दी अनुवाद *मेरा हिन्दुस्तान* का लोकार्पण 30 मई, 2012 को एक समारोह में हुआ। लोकार्पण का यह कार्यक्रम दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र तथा नटराज बुक पब्लिशर्स की ओर से राजपुर रोड स्थित वर्ल्ड इंटिग्रिटी सेन्टर में सम्पन्न हुआ। जाने माने अभिनेता टॉम आल्टर मुख्य वन संरक्षक श्री आर0बी0एस0 रावत, प्रमुख वन सचिव श्री एस0 रामास्वामी इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद थे। 'माई इण्डिया' पुस्तक का हिन्दी अनुवाद संजीव दत्ता द्वारा किया गया है।

दुर्भाग्य से संजीव दत्ता की 2007 में एक सड़क दुर्घटना मौत हो गयी थी। नटराज बुक पब्लिशर्स के श्री उपेन्द्र अरोड़ा ने बताया कि स्व0 संजीव दत्ता ने दुर्घटना से पूर्व उन्हें यह पुस्तक प्रकाशन के लिये उन्हें दी थी।

अभिनेता टॉम आल्टर ने कहा कि जिम कार्बेट ने हमेशा आम आदमी के चरित्र को अपने साहित्य में महत्ता दी है। कार्बेट ने सरल व धाराप्रवाह शैली के साथ गठे हुए शिल्प में प्रकृति और वन्य जीवों से जुड़े जो संस्मरण लिखे हैं वह वास्तव में अद्‌भुत व रोमांचक हैं।उन्होंने कहा मन की गहराई तक छू जाने वाले ऐसे शब्द चित्रों का रेखांकन जिम कार्बेट सरीखा विरला व्यक्ति ही कर सकता है। टॉम आल्टर ने मेरा हिन्दुस्तान पुस्तक के कुछ अंश पढ़कर भी सुनाये। इस मौके पर श्री आर0 बी0एस0 रावत, मुख्य वन संरक्षक तथा उत्तराखण्ड शासन में वन सचिव श्री एस0 रामास्वामी ने भी जिम कार्बेट के व्यक्तित्व, जीवन शैली व उनके द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में किये गये कार्यो पर महत्वपूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने किया। इस अवसर पर नटराज बुक पब्लिशर्स के प्रमुख श्री उपेन्द्र अरोडा, दून पुस्तकालय के सलाहकार श्री राजन बृजनाथ ने भी अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम में देहरादून नगर के प्रमुख साहित्य प्रेमी, पत्रकार, छात्र, व अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित पुस्तकालय के सदस्य उपस्थित थे।

Launch of the book Mera Hindustan

Launch of the book *Mera Hindustan* (Hindi translation of Jim Corbett's *My India*) by the well-known actor Mr Tom Alter was organised on May 30, 2012 in collaboration with Natraj Publishers, the publishers of the book at the World Integrity Centre. Shri S Ramaswami, Principal Secretary Planning, Government of Uttarakhand

was the Chief Guest and Shri R.B.S. Rawat, Principal Chief Conservator of Forests, Uttarakhand was the Guest of Honour.

निःशुल्क प्रदर्शन

भारत एक खोज

दूरदर्शन द्वारा तैयार *भारत एक खोज* धारावाहिक का निःशुल्क प्रदर्शन दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से 5 मई 2012 से हर हफ्ते शनिवार को किया जा रहा है। पुस्तकालय के सदस्य, इतिहास में रुचि रखने वाले लोग व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र इस फिल्म का आनन्द उठा रहे हैं। लगभग डेढ़ घण्टे तक बड़े परदे पर इस धारावाहिक का प्रदर्शन हर शनिवार को सायं 4.00 बजे से पुस्तकालय के वाचनालय कक्ष में किया जा रहा है। इससे पूर्व वर्ष 2009 में इस फिल्म का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया जा चुका है। 5 मई 2012 से हर हफ्ते शनिवार को प्रदर्शित इस धारावाहिक की अब तक 45 कड़ियां दिखायी जा चुकी हैं। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के श्री खुशीराम शर्मा और श्री जगदीश सिंह महर द्वारा इस धारावाहिक के प्रदर्शन में सहयोग दिया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि *भारत एक खोज* 53 कड़ियों का एक टी0वी0 धारावाहिक है। जिसमें 5000 वर्ष पुराने इतिहास से लेकर स्वाधीनता प्राप्ति के दौर तक की कई झलकियां प्रस्तुत की गयीं हैं। इस धारावाहिक में भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखण्डों का सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक पहलुओं का दिलचस्प नजारा देखने को मिलता है। भारत एक खोज पं0 जवाहरलाल नेहरु की प्रसिद्ध किताब द *डिस्कवरी ऑफ इण्डिया* पर आधारित है। प्रसिद्ध फिल्मकार श्याम बेनेगल द्वारा इस

धारावाहिक का निर्माण दूरदर्शन के लिये किया गया। इसमें जाने माने अभिनेता रोशन सेठ सूत्रधार व पं0 जवाहरलाल नेहरु की भूमिका निभा रहे हैं। विशेष तौर पर मशहूर अभिनेता ओमपुरी की कड़क आवाज इस धारावाहिक में सबको प्रभावित करती नजर आती है। कुल मिलाकर पुस्तकालय के सदस्यों के लिये यह धारावाहिक उपयोगी हो रहा है।

TV serial Bharat Ek Khoj

Since March 2012 weekly screening of Shyam Benegal's TV serial *Bharat Ek Khoj*, based on Jawaharlal Nehru's *Discovery of India* is being held in the Library. So far over 40 episodes of the serial have been shown. A number of young users of the library regularly attend and find the programme very informative. In the past too similar screening had been organized and proved to be very popular among the young members.

व्यक्तित्व

गौरीदत्त पाण्डे 'गौर्दा'

कुमांऊनी जनकवि के रूप में प्रतिष्ठित गौरीदत्त पाण्डे 'गौर्दा' के काव्य में हमें तत्कालीन पहाड़ी समाज के जीवन से जुड़े विविध पक्षों के दर्शन होते हैं। जंगल, महिलाओं की दशा, समाज सुधार से लेकर स्थानीय प्रतिरोध और राष्ट्रीय आन्दोलनों तक सभी विषयों पर 'गौर्दा' ने अपनी लेखनी चलाई। 'गौर्दा' बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक कुशल वैद्य के साथ-साथ वे गायक, संगीतज्ञ व रामलीला के भी अच्छे कलाकार थे। एक सच्चे समाज सेवी के रुप में वे पाखण्ड, छूआछूत व पाश्चात्य संस्कृति की नकल को हमेशा चुनौती देते रहते थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी 'गौर्दा' की यह कविता **गलहार बन्देमातरम्** उनके अन्दर निहित देशप्रेम को दर्शाती है।

छीनी न सकनी कभै सरकार बन्देमातरम्।
हम गरीबन को छ यो गलहार बन्देमातरम्।

हम त वी छौं जोकि हुण चैंछ हमन ये बखत पर,
आज कूंणा लागि रछ संसार बन्देमातरम्।
दुर्जनन को मन जली भंगार हूंछ वी बखत,
कान में जब पुजनछ झंकार बन्देमातरम्
जेल में चाखा पिसण औ भूख लै मरणा बखत,
वी बखत लै य कणि करिया प्यार बन्देमातरम्।
मौत का मुख में खड़ा कूणा लागा हत्यार थें,
ठोकि दे ठोठ्याड़ में तलवार बन्देमातरम्।
बैदि लै नाड़ी देखी मुनलै हिलै बेर कै दियो,
यो त देशभक्ती को छ बेमार बन्देमातरम्।
होलि दिवाली ईद है लै लाड़िलो छ सौ गुना,
मानणे छ एक ही यो त्यार बन्देमातरम्।
छीनी न सकनी कभै सरकार बन्देमातरम्।

(हिन्दी भावार्थ – अंग्रेजी हूकूमत की यह सरकार हमारे बन्देमातरम् को कभी भी नहीं छीन सकती है। यह बन्देमातरम् तो हम गरीबों के गले का हार है। हम तो वही कर रहे हैं जो इस वक्त पर हमें करना चाहिए। आज सारा संसार बन्देमातरम् का उद्घोष कर रहा है। दुर्जनों (अंग्रेजी हूकूमत की सरकार) का मन उस समय जल कर भस्म हो जाता है जब उनके कान में बन्देमातरम् की झंकार पड़ जाती है। देशभक्तो! तुम जेल में चक्की पीसते और भूख से मरते समय पर भी इसी बन्देमातरम् को प्यार करना। मौत के मुहाने पर खड़े देशभक्त कह रहे हैं बन्देमातरम् की तलवार इनकी छाती में घोप देंगे। देशभक्तों की नाड़ी देखकर वैद्य भी अब सिर हिलाकर कहने लगे हैं कि इन्हें बन्देमातरम् की बीमारी जकड़ चुकी है। इन देशभक्तों के लिये तो यह बन्देमातरम्, होली, दिवाली व ईद के त्यौहार से भी छः सौ गुना ज्यादा प्यारा हो गया है।

संगोष्ठी
विश्व पर्वत दिवस वर्ष 2012
महिलाएं और वन : सदंर्भ उत्तराखण्ड

दिनांक 11 दिसम्बर, 2012 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा राजपुर रोड स्थित होटल ग्रेट वैल्यू में *महिलाएं और वन : सदंर्भ उत्तराखण्ड* पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्व पर्वत दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध पर्यावरण विद श्री चण्डी प्रसाद भट्ट मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री इन्दु कुमार पाण्डे पूर्व मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन द्वारा की गयी। इस कार्यक्रम में कुशल पर्वातारोही, पर्यावरण प्रेमी व शिक्षाविद् डॉ0 हर्षवन्ती विष्ट व जन समुदाय की सहभागिता से जल व जंगल के संरक्षण में अद्विितीय योगदान देने वाले श्री सच्चिदानंद भारती मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में वक्ताओं ने पहाड़ के वर्तमान पर्यावरण की स्थिति और उसके संरक्षण पर अपने अमूल्य विचारों को उपस्थित लोगों के बीच साझा किये।

सबसे पहले डॉ0 हर्षवन्ती विष्ट ने गंगोत्री हिमानी क्षेत्र में पर्यावरण की समस्याएं एवं उनके संरक्षण के प्रयासों पर अपने व्याख्यान का प्रस्तुतीकरण विभिन्न स्लाइडों के जरिये लोगों के सम्मुख रखा। उन्होंने गंगोत्री ग्लेशियर का उदाहरण देते हुए हिमालय के अन्य तमाम ग्लेशियरों के बिगड़ते पर्यावरण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनके संरक्षण के लिये काम करने की जरुरत बतायी। गंगोत्री हिमानी क्षेत्र पर दिखाये गये उनके छाया चित्रों की उपस्थित लोगों ने सराहना की।

जन समुदाय की सहभागिता से पर्यावरण संरक्षण में अभिनव योगदान देने वाले श्री सच्चिदानंद भारती ने आज के परिपेक्ष्य में जल और जंगल के प्रति महिलाओं का रुझान क्या है इस पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने जन समुदाय की सहभागिता से उफरैंखाल क्षेत्र में किये गये चौड़ी पत्ती प्रजातियों के पौंधरोपण और हजारों की संख्या में बनाये गये चाल-खालों के जरिये मिली अद्भुत सफलता का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि इस तरीके से काम कर हम लोग समूचे पहाड़ के पर्यावरण को बचाने में कामयाब हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि श्री भारती ने दूधातोली लोक विकास संस्थान के माध्यम से पौड़ी जनपद के उफरैंखाल क्षेत्र में वन संवर्द्धन और जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके पाणी राखो आन्दोलन के तिए उन्हें कई संगठनों की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और सुप्रसिद्ध पर्यावरण विद् श्री चण्डी प्रसाद भट्ट

ने अपने वक्तव्य में कहा कि पहाड़ की महिलाओं और वनों का आपस में गहरा रिश्ता जुड़ा है। आज के सन्दर्भ में यदि बात करें तो इन दोनों की स्थिति चिन्ताजनक है। उन्होंने कहा कि विश्व के सारे पहाड़ एक जैसे हैं। पर्यावरण का संकट सिर्फ हिमालय पहाड़ में नहीं अपितु विश्व में मौजूद सारे पहाड़ों पर गहरा रहा है। विकास के नाम पर किये जा रहे तमाम निर्माण कार्यो से पहाड़ के प्राकृतिक संसाधनों का नुकसान हो रहा है इन करणों से पहाड़ का अस्तित्व खतरे में है। ऐसे में मानव जाति के लिये आने वाले समय में बहुत कठिन समस्याएं पैदा हो जायेंगी। उन्होंने तकरीबन 100 से अधिक बेहतरीन स्लाइडों के जरिये हिमालय की यथार्थ स्थिति से उपस्थित लोगों को अवगत कराया। पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में श्री चण्डी प्रसाद भट्ट ने पहाड़ के वन पंचायतों और वहां की महिलाओं को समृद्ध करने की जरूरत भी बतायी।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे पूर्व मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन श्री इन्दु कुमार पाण्डे ने कहा कि पहाड़ के लिये योजनाएं बनाते समय स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं और उनके मानवीय पक्षों को भी जरुर ध्यान में रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्व के तमाम देशों में पहाड़ में रहने वाले लोग विकास की मुख्य धारा से जुडे हैं पर हमारे देश में ऐसा नहीं है।

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने कार्यक्रम

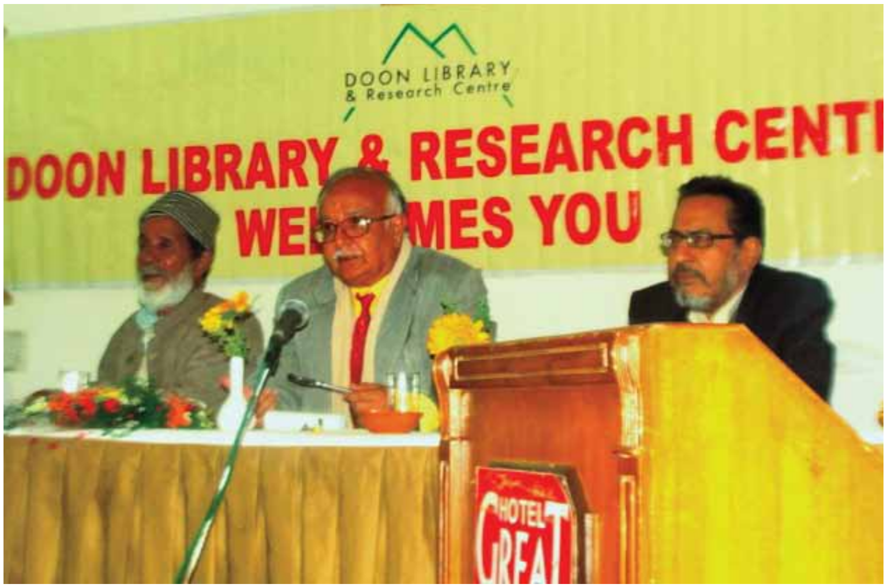

से पूर्व विश्व पर्वत दिवस और संगोष्ठी के विषय-वस्तु पर परिचयात्मक जानकारी देकर मुख्य अतिथियों और उपस्थित लोगों का आभार प्रकट किया। इससे पहले सलाहकार श्री राजन बृजनाथ ने अतिथि गणों का स्वागत कर उनका परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के रिसर्च एसोसिएट चन्द्रशेखर तिवारी ने किया। कार्यक्रम में देहरादून नगर के पर्यावरण प्रेमी, पत्रकार, छात्र सहित तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

Mountain Day Observed on 12th December, 2012

On the occasion of the International Mountain Day, the Doon Library & Research Centre organized a day long discussion on December 11. The theme identified by FAO for this year's International Day was *Mountains and Forests*. Based on this we decided to focus on the theme *Women and Forests: Context Uttarakhand* for our discussions. The Chief Guest on the occasion was Shri Chandi Prasad Bhatt, leading environmentalist and social worker of the country, recipient of Padma Bhushan, Magsaysay awardee and numerous other awards and decorations. The other speakers on the occasion were Dr Harshvanti Bisht, Principal Government PG College, Doiwala (Dehradun), well-known mountaineer and environmentalist and Shri Sachidananda Bharti of the Doodhatoli Lok Vikas Samiti, a key Chipko activist and environmental crusader. Shri Indu Kumar Pandey, former Chief Secretary, Uttarakhand and presently Adviser on Planning and Development to the Chief Minister, Uttarakhand presided over the function.

Presentations by Shri Bhatt and Dr Bisht were accompanied by slides highlighting the natural resources, biological diversity and lives of the ordinary mountain dwellers, especially women in the Uttarakhand Himalayas and the changes that have occurred in the Gangotri glacier over the years. The view emerging from the discussion was that conservation of the mountains was possible by a vigorous programme of afforestation. Large scale participation of women was necessary for such a programme to be effective.

Comment: Indian State and Patriarchy: What Does it Mean ?

Some time in 1988, when I had just finished work on my PhD thesis, I met another research scholar, who said that the topic of her research was *Indian State and Patriarchy*. Nearly 25 years later I think that I am beginning to understand the meaning of this term. There are laws like 498 A which make mental torture of a married woman a cognizable offence. Six years back a very comprehensive law on domestic violence was passed. But the attitude of the authorities is never positive. They tend to assume that such provisions are grossly misused. Violence against women has been on the increase. Opinion of politicians cutting across party lines is unanimous on the causes of this escalation: young girls and women should not venture out of their homes in the late hours of the day. Many politicians want to impose a dress code on women. This shows the patriarchal mindset of the Indian state.

When figures show a high percentage of population suffering from malnutrition, the standard response is

to strengthen the public distribution system. One very important cause is ignored viz., food distribution within the family is not even. This problem is very acute in the agriculturally prosperous region of Haryana and Western UP. If women are suffering from malnutrition, the children born to such women are also going to suffer. But our planners do not seem to be inclined to address this problem. The patriarchal mindset of the Indian state seems to be at work here also.

As India is a vast country there are several political ideologies at work and there are different political parties representing these ideologies. On many issues of vital importance a political consensus is impossible to find. But apparently none of the parties seem to have a problem with the patriarchal mindset of the Indian state.

-Manoj Panjani

Review:

Meera Kosambi, Women Writing Gender: Marathi Fiction before Independence, New-Delhi 2012. This work is an anthology of Marathi (abridged) novels and short stories written by women during the late 19th and the 20th century. Literature produced during the period of Nationalism and Social Reform was predominantly didactic in nature. Fiction was a forum in which social issues were debated and discussed. My own research "The Ideological Progression of the Women Question in Colonial India,1820-1947" (a Research Project Undertaken by the Doon Library and Research Centre) has shown that there existed in 1947, a women's movement with a well defined agenda. The salient features of this agenda were economic independence for women, their right to inherit property, similar educational curriculum for boys and girls, their right to divorce, right to control over fertility, and a concept of marriage based on the notion of love and companionship.

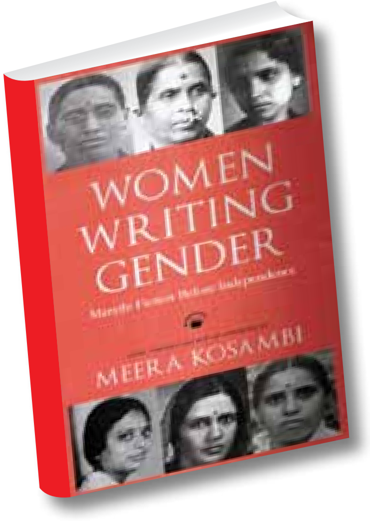

These ideas were developed over a period of nearly 90 years by women themselves. Since the second half of the 19th century, a handful of educated women developed a self perception about themselves and their position in society. Towards the end of the century women like Tarabai Shinde, Pandita Ramabai Saraswati and Mokhshodayani expressed dissatisfaction with their existing conditions and by 1917 they were demanding equal status. A novel of Kashibai Kanitkar included in this anthology which she started writing in 1913 and which was published in 1928 had an introduction which said that gender egalitarianism was her utopia. By participating in the Non-Co-Operation and Civil Disobedience movements their quest for equality got legitimacy and the 1931 session of the Indian National Congress passed the resolution on equal rights. After that women focussed their energies on defining equality.

Meera Kosambi's anthology shows the major contours of the debates concerning women's issues. The anthology contains excerpts from two novels of Kashibai Kanitkar and Indira Sahasrabudhe, abridged novels of Geeta Sane and Premabehn Kantak and stories of Vibhavari Shirukar and Shakuntala Paranjape. Kashibai Kanitkar belonged to an earlier generation, while the other writers in this anthology wrote in the 1930's when the Women's Question had acquired a somewhat radical colour. The works of these writers talk about the oppressive aspects of the institution of marriage. A woman does not have a say in the choice of her husband. Redressal in the form of divorce is not available to her. Bigamy is legal for a man. He is free to desert his wife. Economic independence had been regarded as a panacea for all the ills faced by women. One story by Vibhavari Shirukar deals with the issue of the

exploitation of a working women by her own family. The complex issue of women's sexuality is also dealt with in these works.

The 77 page introduction discusses in brief the manner in which women's issues are discussed in the works of male authors like HN Apte, VM Joshi, SV Ketkar, NS Phadke, VS Khandekar, BV Varekar and GT Madkholkar. Their attitude according to the author is patronising.

-Manoj Panjani

Our Publications

1. **Reflections on Reform of Higher Education in Uttarakhand**

   - B.K. Joshi, 2008
2. **2009 Lok Sabha Election in Uttarakhand : An Analysis**

   - B.K. Joshi & Amit Verma, 2009
3. **Uttarakhand ke Samajik Itihas Lekhan ki Samasyaen**

   - D.D. Sharma,2010
4. **Towards a New Architecture of Local Government with Special Reference to Uttarakhand**

   - B.K. Joshi, 2010
5. **Readership Survey : Preliminary Results**

   - B.K. Joshi & C.S. Tewari, 2010
6. **Census 2011 : A Preliminary analysis of Results for Uttarakhand**

   - B.K. Joshi & Amit Verma, 2011
7. **Biodiversity Conservation in the Western Himalaya: Western Himalayan Ecoregional Strategy and Action Plan**

   - Surendra P. Singh & Rajesh Thadani, 2011
8. **Kumaun Anchal me Ramleela ki Parampara**

   - Chandrashekhar Tewari (Ed.), 2011
9. **Allahabad Coffee House : Chand Yaadein**

   - Manoj Panjani (Ed.), 2011
10. **Chal Tumadi Bate – Baat** (Folk Tales of Uttarakhand)

    - Deewan Nagarkoti, 2012
11. **"Missing" Girl Child in Uttarakhnd**

    - B.K. Joshi,2012
12. **Himalay Ke Gaon Mein** (A Travelogue)

    - Arun Kuksal and Chandrashekhar Tewari, 2012

DOON LIBRARY & Research Centre

Himadri is published by Dr B K Joshi on behalf of Doon Library & Research Centre, 21 Parade Ground, Dehradun 248001, Uttarakhand and printed at Shiva Offset Press, Dehra Dun. Ph: +91 135 2711485; Fax: +91 135 2713065;
E-mail: doonlib@yahoo.co.in; Website: www.doonlibrary.org